IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों का स्थानः एक अध्ययन

डा0 सुनिल कुमार

पूर्व शोध छात्र, इतिहास विभाग

बी0आर0ए0बी0यू0 मुजफ्फरपुर

पृष्टभूमिः मध्यकालीन भारतीय समाज दो वर्गों में बंटा हुआ था–हिन्दू एवं मुस्लमान। हिन्दू वर्ग बहुसंख्यक था, लेकिन शासन के लिए राज्य के उच्च पद मुस्लमानों के लिए सुरक्षित था। हिन्दू समाज को अक्सर राजकीय उच्च सेवाओं से अलग रखता था। इस प्रकार के वर्ग विभेद से हिन्दू एवं मुस्लमान में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। मध्यकालीन सामाजिक वर्ग का अध्ययन अधुरा रह जाता है यदि उस युग की स्त्रियों की स्थिति की चर्चा न की जाय। भारतीय समाज में आरंभ से ही स्त्रियों को पुरूष के अधीन माना जाता था तथा आजन्म तक इस स्थिति में जीना पड़ता था। हिन्दू लड़कियों को जन्म से कौमारावस्था तक पिता उसका संरक्षक होता था, यौवनावस्था में पति तथा पति के मृत्यू के बाद पुत्र। पारिवारिक जीवन में पुत्र की माता होने से उसका स्थान सम्मानपूर्ण होता था, लेकिन यदि वह पुत्री को जन्म देती थी या, विधवा हो जाती थी तो उसे जीवन की कई यातनाओं का सामना करना पड़ता था। बहु–विवाह तथा अशिक्षा तत्कालीन सामाजिक जीवन के स्वाभाविक दोष थे। परंतु जिन जातियों में विवाह, तलाक तथा स्वेच्छा से विवाह करने की प्रथा थी उस समाज में स्त्रियों का प्रभाव पारिवारिक जीवन में महत्वपूर्ण माना जाता था। किसान के परिवार में स्त्रियां पति के काम में पुरा सहयोग करती थी ऐसे समाज में स्त्रियों का पूरा सम्मान था। इसके अलावा उच्च वर्ग में कई ऐसी स्त्रियों थी जो कई कार्यों में पुरूष का साथ देती थी, जिनकी गणना आदर्श स्त्री में की जाती है। इस काल में राजपरिवार की स्त्रियों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है, जिनमें अनेक कुशल प्रशासक, विदुषी, लेखक तथा चित्रकार थी।

मुस्लिम परिवारों में फारसी परंपराओं को अपनाया जाता था, फलतः स्त्री का स्थान निम्न माना जाता था। तुर्की प्रभाव से सामान्य मुस्लिम युवक भी बहुविवाह करने लगे। संपन्न वर्ग के लोग अपने पत्नी के साथ ही दासियों से भी शारीरिक संबंध स्थापित करते थे, फलतः इन दासियों की संतानें आगे चलकर बराबरी का हक मांगने का प्रयास करती थी, ऐसी स्थिति में सामाजिक फूट एवं विवघटन को बढ़ावा मिलता था। मध्यकाल पर दृष्टिपात करने पर ऐसे प्रकरण सामने आते है, जब दासियों से उत्पन्न संतानों ने मुश्किल पैदा की थी।[1]कुतुबुद्दीन मुबारक अली तथा कैकुबाद के समय यह व्यवस्था के दोष स्पष्ट दिखाई देते है।मुगल काल भी इन दोषों से खाली न था। नुरजहॉ–जहांगीर प्रकरण तथा जहांगीर के प्रधान रानी द्वारा आत्महत्या के प्रमाण इन्हीं परिस्थितियों से जुड़े हुए है। इस युग में प्रचलित पर्दा प्रथा भी एक बहुत बड़ा दोष था लेकिन कुछ स्थानों पर स्त्रियों को अधिक स्वतंत्रता दी गई थी। उच्च परिवारों की स्त्रियों शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। रजिया एवं नुरजहॉ की कार्यकुशलता अपने आप में एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। स्त्रियों पुरूषों की तरह वेश–भूषा का प्रयोग करती थी और खेल–कुद मे भाग लेती थी। मुस्लिम समाज में विधवा विवाह तथा तलाक की स्वीकति थी। उन्हें संपति में समान अधिकार था। इन सभी विशेषताओं के कारण साधारणतः मुसमानी समाज का पारिवारिक जीवन सरल तथा सुखमय था।

सल्तनतकाल में स्त्रियों का स्थानः प्राचीन काल से सामाजिक व्यवस्था में स्त्री–पुरूष का साथ एक प्रमुख बात रही है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कार्यों के कारण स्त्रियों का आदर किया जाता था। स्त्रियों के कारण किसी समाज की उन्नति हो सकती है। समाज में स्त्री का स्थान किसी भी युग की सामाजिक संस्कृति का मापदंड है।[2] प्राचीन काल में स्त्रियों ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य करके समाज में काफी आदरनीय स्थान प्राप्त किया था। उन्होंने अपने पतियों को संकट के समय अपने परामर्श द्वारा सहायता दी यहॉ तक कि देश की रक्षा या कुटुम्ब की मर्यादा के लिये उन्होंने हथियार तक उठा लिये। ऐसे बहुत उदाहरण मिलते हैं जबकि विधवा रानियों ने कुशलतापूर्वक कार्य किया। पूर्व मध्यकालीन भारत में सम्राट हर्ष के समय उनकी बहन राज्यश्री ने पति की मृत्यु के बाद अपने भाई के साथ राज्य–कार्य में भाग लिया था।राजपूत काल में भी राजवंश की योग्य कन्याओं को शासकीय शिक्षा प्रदान की जाती थी। राजदरबार में भी स्त्रियॉ भाग लेती थी। यही नहीं राज महलों में वे दासी, प्रतिहारों एवं रक्षक के रूप में कार्य करती थी। हर्ष के समय में हथियार धारण करने वाली स्त्रियॉ प्रतिहारी कहलाती थी। वे दरबार में आने जाने वालों पर निगाह रखती थी और अंदर जाने वाले के नाम पुकारती थी।[3] कभी–कभी सम्राट के साथ शिकार पर भी जाती थी। विभिन्न उत्सवों तथा त्योहारों के अवसर पर वे नाच–गानों में भाग लेती थी। प्रायः उनसे गुप्तचर या, विषकन्या के रूप में दुश्मन का अंत करने में सहायता ली जाती थी।[4]विद्याध्ययन के क्षेत्र में स्त्रियॉ पीछे न थी जैसे–शीला, इन्द्रलेखा तथा सुभद्रा। पूर्व मध्यकालीन भारत में स्त्रियों ने साड़ी पहनना शुरू कर दिया था। इसके अतिरिक्त लहंगा तथा कंचुकी भी पहना जाता था।[5] विभिन्न प्रकार के किमती आभुषण धारण करती थी। गरीब स्त्रियॉ सोने तथा चॉदी के स्थान पर कांच, हाथी दांत तथा पीतल के गहने पहनती थी। आभूषणों के अतिरिक्त स्त्रियॉ विभिन्न प्रकार साधनों द्वारा अपने मुख तथा शरीर की शोभा भी बढ़ाती थी।[6]

तुर्कों के आने से पूर्व स्त्रियों की दशा पूर्णतः निराशाजनक न थी। जबकि स्वतंत्रता और सम्मान के वे अधिकार जो उन्हें प्राचीन भारत में प्राप्त थे धीरे–धीरे समाप्त हो गये थे फिर भी जो कुछ भी बचे थे वह काफी महत्वपूर्ण थे। जब तुर्क भारत में आये तो वह अपने साथ स्वयं की परंपरा लेकर आये थे, जो कि उन्हें अरबों तथा अब्बासियों से ग्रहण की थी। अरब में स्त्रियों का आदर होता था।अरब में परदा प्रथा 10वी शताब्दी में प्रचलित हुआ। इस समय सुल्तान की माता का बहुत आदर होता था, उसके बाद उसकी मुख्य पत्नी का स्थान था। राजपूत तथा फारसी प्रथा के अनुसार माता का स्थान पत्नी से भी अधिक महत्वपूर्ण था। अंतःपुर की स्त्रियों का बड़ा सम्मान होता था। उन्हें बड़ी–बड़ी पदवियां दी जाती थी[7]जैसे मलिका–ए–जहान, मखदूमह–ए–जहान इत्यादी। इल्तुतमिश की पत्नी शाह तुर्कान सल्तनत काल की प्रथम स्त्री थी जिसने राजनीति में भाग लिया। यद्यपि इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था, फिर भी शाह तुर्कान ने राजनीतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप किया। पति के मृत्यु के बाद अयोग्य पुत्र सकनुरूद्दीन फिरोज को गद्दी पर बैठा दिया तथा सारी शक्ति अपने हाथों में ले ली। यहॉ तक की फरमान तक जारी करना शुरू कर दी।

रजिया का सिंहासनारोहण दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक इतिहास में बहुत महत्व रखता है। प्रथम बार केवल योग्यता के आधार पर एक स्त्री के गद्दी प्राप्त करने के अधिकार को सम्मान प्रदान किया गया। राजनीति में स्त्री वर्चस्व का दूसरा उदाहरण है रजिया बेगम। रजिया ने सफलतापूर्वक 4 वर्षों तक शासन किया। जब इल्तुतमिश ने रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया तो कुछ दरबारियों ने कहा कि पुत्रों के रहते हुये पुत्री को गद्दी देने की जरूरत नहीं है। परंतु किसी ने कानुनी विरोध नहीं किया। ऐसा महसुस होता है कि वे लोग इस बात से सहमत नहीं हो सके कि एक स्त्री उस पर शासन करे।

खिलजी वंश के संस्थापक जलालउद्दीन खिलजी की पत्नी तथा सकुनुरूद्दीन इब्राहिम की माता मलिका–ए–जहान।[8]वह एक महत्वाकांक्षी स्त्री थी और अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण उसने अपने दामाद अलाउद्दीन को घरेलू जीवन से दूर कर दिया था। अलाउद्दीन को राजधानी छोड़कर कड़ा जाना पड़ा था। 1296 ई0 में जलालुउद्दीन की मृत्यु के बाद उसने अपने पुत्र को गद्दी पर बैठाने का प्रयास किया ताकि वह राजनीतिक शक्ति अपने हाथों में ले ले। उसने धीरे–धीरे राजनीतिक सत्ता अपने हाथों में एकत्रित कर ली और राज–आज्ञाएं जारी कर के शासन करना प्रारंभ कर दिया। कुछ समय बाद अलाउद्दीन ने परिस्थितियों से लाभ उठा कर सकुनुरूद्दीन पर आक्रमण कर दिया। मलिका–ए–जहान और उसका पुत्र पराजित हुये। तुगलक शासक स्त्रियों का बड़ा सम्मान करते थे। मोहम्मद तुगलक अपनी माता का इतना आदर करते थे कि उसे सरकारी मामलों में भी प्रभाव डालने की आज्ञा तक दे दी थी। मोहम्मद तुगलक के मृत्यु के पश्चात् उसकी बहन खुदावन्दजादा ने अपने पुत्र दखर बक्श को गद्दी पर बैठाने का प्रयास किया। उसने तो फिरोज तुगलक को मरवाने का भी प्रयास किया लेकिन असफल रही। लोदी वंश के समय में भी स्त्रियों में समकालीन राजनीति में प्रभाव डालने के उदारण प्राप्त होते है। जब बहलोल लोदी और जौनपुर के शर्की शासक में लड़ाई हुयी तो जौनपुर के राजवंश की स्त्रियों ने राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया । जौनपुर में सुल्तान महमुद शर्की की पत्नी बड़ी महत्वांकांक्षी थी और वह अपने पिता सुल्तान अलाउद्दीन (जो सैय्यद वंश का शासक था) जो बहलोल लोदी द्वारा पराजय का बदला लेना चाहती थी। अपने अपने पति को बहलोल लोदी के खिलाफ युद्ध करने को उकसाया। सुल्तान मुहमूद शर्की की माता बीबी राजी भी बड़ी गुणवान और बुद्धिमान स्त्री थी। सुल्तान महमूद के बाद उसने अमीरों की मदद ली और राजकुमार मोखन को गद्दी पर बैठाया। वह बहलोल लोदी तथा शर्की सुल्तान के बीच भूमि संबंधी झगड़ा था उसे भी सुलझाने में सफल रही। शर्की वंश के अंतिम शासक हुसैन शाह की पत्नी मलिका–ए–जहान ने भी समकालीन राजनीति में हस्तक्षेप किया।[9] लोदी वंश की स्त्रियॉ भी राजनीति में काफी रूचि लेती थी। शम्सखातुन जो बहलोल लोदी की मुख्य पत्नी थी उसने सुल्तान को मजबुर किया कि वह तब तक शांत न हो जब तक उसके भाई कुतुबखान जिसे सुल्तान शर्की ने पकड़ लिया था, छोड़ न दे। बीबी अम्मा जो कि बहलोल लोदी की हिन्दू पत्नी तथा निजाम खान(सिकंदर लोदी)माता थी एक महत्तवाकांक्षी स्त्री थी। अपने पति की मृत्यु के बाद उसने अपने पुत्र को गद्दी दिलवाने में सफल रही।उसने देखा कि राजगद्दी को लेकर उसके पुत्र की अवहेलना की जा रही है क्योंकि वह हिन्दू मॉ से उत्पन्न हुआ है।

सल्तनत काल में हिन्दू नारियों ने भी अंतःपुर में प्रवेश किया।[10] अलाउद्दीन खिलजी का कमला देवी, जो गुजरात के राय कर्ण बघेला की स्त्री थी, हिन्दू महिला से विवाह का प्रथम उदाहरण मिलता है। यह भी कहा जाता है कि अलाउद्दीन ने रामचन्द्र देव की पुत्री से भी विवाह किया था। उसने अपने पुत्र खिज्राखन का विवाह राय कर्ण की पुत्री देवल देवी से किया। फिरोज तुगलक का जन्म राजपूत स्त्री से हुआ था। सिकंदर लोदी की माता भी हिन्दू थी। परंतु इन स्त्रियों के अंतःपुर में प्रवेश के बाद भी विशेष देन नहीं रही। दिल्ली के सुल्तानों ने एक मिश्रित संस्कृति के महत्व को अभी तक स्वीकार करना नहीं सीखा था। राजवंश की स्त्रियॉ अपनी उदारता एवं दानशीलता के लिए प्रसिद्ध थी। शाह तुर्मान परोपकार एवं विद्वानों के संरक्षण के लिये विख्यात थी। मुहम्मद तुगलक की माता भी अपनी उदारता के लिये जानी जाती है और इसलिए उसे सामाजिक ख्याति प्राप्त थी। रजिया के गुणों से यह सिद्ध होता है कि तुर्की शासक अपनी पुत्रियों की शिक्षा की अवहेलना नहीं करते थे।यद्यपि स्त्री शिक्षा परदे के कारण नियंत्रित थी। लड़कियॉ अक्सर उन स्कूलों में पढ़ती थी जहॉ निजी घरों पर शिक्षक उनके लिये शिक्षा प्रदान करते थे। देवल रानी के गुणों से पता चलता है कि हिन्दू राजा भी अपनी पुत्रियों की शिक्षा समान रूप से ध्यान रखते थे। शिक्षा के अतिरिक्त स्त्रियॉ संगीत एवं नृत्य भी सीखती थी। मालवा के गियासउद्दीन खिलजी के अंतःपुर में अध्यापिकायें, गायिकायें और प्रार्थना पढ़ने वाली स्त्रियॉ रहती थी। गियासुउद्दीन खिलजी के काल की दो गायिकायें फतूहा और मुसरत खातुन प्रसिद्ध थी। दुख्तर खासा मेहर अफरोज और नुसरत बीबी नृत्य में प्रवीण थी। स्त्रियॉ प्रसाधन, आभुषण और सौंदर्य में विशेष रूची रखती थी। इस काल में स्त्रियॉ मुख्य तौर से दो प्रकार के पहनावे पहनते थे–एक बड़ी सी अच्छे कपड़े की चादर, चोली और अंगिया। दूसरे प्रकार के पहनावे में था लहंगा, चोली तथा रूपटिया। मुस्लिम स्त्रियां ढीले पजामे, कुर्ती और दुपट्टा पहनती थी। मुस्लिम स्त्रियॉ रोज के पहनावे में नीला रंग नहीं पहनती थी क्योंकि वह शोक का रंग माना जाता था।

जहॉ तक साधारण या, मध्य श्रेणी की स्त्रियों का संबंध है उनके विषय में कोई विशेष सूचना नहीं मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने उच्च वर्ग की स्त्रियों का ही अनुसरण किया होगा। परंतु इतना स्पष्ट है कि मुस्लमानों के आने के बाद से जो अनिश्चिता तथा भय फैला, उससे साधारण वर्ग की स्त्रियों के स्थान को धक्का पहूँचा। पर्दा और भी कठोरता से किया जाने लगा। कभी–कभी मुस्लिम स्त्रियॉ भी जौहर कर लेती थी। जैसे तैमुर के भदनेर आक्रमण के समय मुस्लमान स्त्रियों ने जौहर किया था।[11] फिरोज तुगलक एवं सिकंदर लोदी ने स्त्रियों की स्वतंत्रता पर भी प्रतिबंध लगा दिया। इन प्रतिबंधों से यह स्पष्ट है कि साधारण वर्ग की स्त्रियॉ बहुत प्रसन्न नहीं थी।

मुगलकाल में स्त्रियों का स्थानः 1526 ई0 में बाबर ने भारत में मुगल वंश की नींव डाली। सल्तनत काल के भांति इस काल में भी स्त्रियों ने राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन में योगदान दिया। इस समय भी स्त्रियों ने विभिन्न क्षेत्रों में भाग लिया। बाबर ने तैमूर तथा चंगेज खां दोनों की ही परंपरा को अपनाया था तथा अपनी स्त्रियों को इतना अधिकार दिया कि वह राजनीति में भाग ले सकें।परंतु उसने उन्हें राजसत्ता का अधिकार नहीं दिया।[12]बाबर की माता कुतलुग निगार खानम हमेशा बाबर के साथ युद्धों में जाती थी। बाबर की पत्नी महिम बेगम ने उसकी सहायता की। महिम बेगम अकेली रानी थी जो सम्राट के साथ दिल्ली की गद्दी पर बैठती थी। बाबर की एक अन्य पत्नी मुबारिका ने बाबर तथा युसुफजई कबीले के संघर्ष को कम करने की कोशिश की। हुमायूँ के काल में खानजादा बेगम जो उसकी बुआ थी ने कई राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता की थी। जब भाइयों में आपस में संघर्ष हुआ तो हुमायूँ ने खानजादा बेगम की मदद ली थी। अंतःपुर में बाहर की कुछ स्त्रियों ने हुमायूं के समय में राजनीतिक विषयों में दिलचस्पी ली। उनमें थी हरम बेगम, हुमायूँ के भतीजे सुलेमान मिर्जा की पत्नी और लार्ड मलिका अफगान अमीर ताजखान सारंग की पत्नी। रानी कर्मवती, राणा सांगा की पत्नी ने भी मेवाड़ की राजनीति में भाग लियाऔर अपने पुत्र विक्रमादित्य के शासन को संभाला क्योंकि वह बड़ा अयोग्य था। जब बहादुरशाह ने गुजरात पर आक्रमण की धमकी दी तो रानी कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेज कर सहायता के लिये प्रार्थना की। उसे विशेष सहायता न मिल पाई। अतः उसने बहादुरशाह से संधि कर ली। परंतु बहादुरशाह ने पुनः 1535 ई0 में चितौड़ पर आक्रमण कर दिया। अंत में रानी ने जौहर कर लिया।

अकबर के प्रारंभिक दिन राजनीतिक विप्लव से भरे थे। उन्हीं दिनों में कुछ स्त्रियों ने इस क्षेत्र में हस्तक्षेप किया। उनमें एक थी महाचुचक बेगम, अकबर की सौतेली माता। उसने न केवल काबुल की आंतरिक राजनीति में भाग लिया बल्कि अकबर के लिये भी समस्या उत्पन्न कर दी थी।[13]एक अन्य स्त्री जिसने अकबर के प्रारंभिक काल में दिलचस्पी ली वह थी–महमअनगा। यह कहा जाता है कि अकबर बैरम खान के संरक्षण तथा हस्तक्षेप से तंग आ गया तो उसने उससे छुटकारा पाने के लिये महमअनगा की मदद ली।[14]महमअनगा ने धीरे–धीरे काफी प्रभाव बढ़ लिया और सम्राट का विश्वास प्राप्त किया। मुगल हरम के बाहर एक हिन्दू स्त्री ने राजनीति में काफी भाग लिया। वह थी दुर्गावती, जो अपने पति दलपत की मृत्यु के बाद अपने पुत्र वीर नारायण की संरक्षक बन गयी और गढ़ पर शासन करने लगी। अपनी बुद्धिमानी, वीरता और दयालुता के कारण उसने कुशलतापूवर्क शासन किया और कोई विद्रोह नहीं हुये। अंत में अकबर की विशाल सेना के समक्ष उसे नतमस्तक होना पड़ा। अकबर के काल में उसकी माता ने राजनीतिक मामलों को सुलझाने में मदद की। जब सलीम ने विद्रोह किया था तब इन्हीं की मदद से उसे क्षमा प्राप्त हुयी थी[15] जहांगीर के काल में शाहजहां बेगम बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। शाहजहां बेगम ने जहांगीर पर जो प्रभाव डाला था वह मुख्यतः व्यक्तिगत था, उसका सम्राट के प्रति प्रेम और हीत पर आधारित था।

शाहजहां के काल के आरंभ में मुमताज महल ने राजनीतिक मामलों में अपना प्रभाव डाला। शाहजहां उससे हमेशा सलाह लेता था और उसके पास राजकीय मुद्रा भी रखता था। मुमताज महल की मृत्यु के बाद जहांआरा बेगम उसकी पुत्री ने भी विभिन्न मामलों में हस्तक्षेप किया। उत्तराधिकार के युद्ध के समय विशेष तौर से जहांआरा ने शाहजहां का बड़ा साथ दिया।[16]शाहजहां की दूसरी पुत्री रोशनआरा बेगम ने औरंगजेब की तरफदारी की। औरंगजेब ने अपनी पत्नियों को राजनीति में भाग लेने का अवसर नहीं दिया था, परंतु उसकी बहन रोशनआरा और जहांआरा बेगम ने थोड़ा बहुत हस्तक्षेप करने का प्रयास किया था। एक बार औरंगजेब की पुत्री जेबुलिया ने एक बार अपने भाई मुहम्मद अकबर के विद्रोह में भाग लिया जिससे औरंगजेब ने नराज होकर उसकी जागीर छीन ली थी। औरंगजेब की दूसरी पुत्री जीनतुन्निसा बेगम को बादशाह ने मराठा कैदी शम्भाजी की पत्नी तथा पुत्र साहु के रखने की जिम्मेवारी सौंपी।[17] बाद के मुगल सम्राटों के समय में भी कुछ स्त्रियों ने राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया। जहानदार शाह के समय में लालकुंवर[18] और मुहम्मद शाह के समय कोकी जीउ के नाम उल्लेखनीय है। राजवंश की स्त्रियां दरबार में उच्च स्थान रखती थी। वह इतना प्रभावशाली मानी जाती थी कि बहुत से व्यक्ति उनके द्वारा सम्राट तक पहुँचने में सफल होते थे। राजवंश की स्त्रियों की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये उन्हें बड़ी–बड़ी सम्माननीय पदवियां दी जाती थी। जैसे अकबर की माता को, 'मरियम मकानी', जहांगीर की माता को 'मरियम –उस–जमानी' और शाहजहां की माता को 'बिल्कीज मकानी' की पदवी दी गयी थी और इसी नाम से पुकारी जाती थी। जहांगीर की पत्नी मेहरून्निसां को 'नूर महल' तथा बाद में नूरजहां का खिताब मिला। मुमताज महल को 'बादशाह बेगम' इत्यादि की पदवियां दी गयी थी। मुगल अंतःपुर की स्त्रियों को बराबर भत्ते और अन्य प्रकार के आय मिलती रहती थी, जिससे वह अपने व्यक्तिगत खर्चे चला सके।

राजवंश की कुछ राजकुमारियों और रानियों ने व्यापार में दिलचस्पी ली। वह विदेशों से व्यापार भी करती थी। नुरजहां बेगम ने कटे हुये कपड़े तथा नील का व्यापार किया। जहांआरा बेगम ने भी इसी प्रकार के व्यापार में भाग लिया था। इस प्रकार राजवंश की स्त्रियों का जीवन बड़े आदर एवं सुख से व्यतीत होता था। राजवंश में स्त्रियों के रहने के लिये महल का बड़ा भाग होता था। वहां पर हर व्यक्ति नहीं जा सकता था, अंतःपुर के अंदर का हाल जानना कठिन होता था। वहां की देखभाल के लिये दरोगा तथा अन्य निरीक्षकाएं होती थी। अंतःपुर की सबसे बड़ी सेविका महलदार कहलाती थी। राजमहल की स्त्रियों के मन बहलाने के विभिन्न साधन होते थे। वह तरह–तरह के खेल खेलती थी। जैसे चौपड़, चन्दन मन्दन पचीसी इत्यादि। कबुतर उड़ाना, पतंग उड़ाना, आभूषण, वस्त्र और सौंदर्य प्रसाधनों में भी उनका काफी समय व्यतीत होता था। कुछ स्त्रियां पढ़ने लिखने का शौक रखती थी। गुलबदन बेगम जो हुमायूँ की बहन थी उसने हुमायूँनामा की रचना की, जो उस समय की सामाजिक एवं राजनीतिक दशा का वर्णन करता है। मुमताज बेगम ने विद्वानों को भी संरक्षण प्रदान किया था जैसे बंशीधर मिश्र। जेबुन्निसा बेगम हस्तलेखन की शैली में माहिर थी। बेगा बेगम और महमअनगा ने स्कूल की नींव डाली तथा विद्यार्थियों को पढ़ने के लिये वजीफे दिये।

हिन्दू समाज में स्त्रियों का स्थान सामाजिक परिवर्तन के कारण काफी बदल गया था। वह आदरनीय स्थान जो स्त्रियों को तुर्को के समाज में आने से पहले प्राप्त था बराबर गिरता गया। हिन्दू घर में लड़कियों को प्रारंभ से ही अपने बड़ों का आदर करना सिखाया जाता था। वह अपने पति को ईश्वर के समान मानती थी और उसका हर आज्ञा का पालन करती थी। उन्हें पतिव्रत धर्म का पालन करना पड़ता था। गृह कार्य ही स्त्रियों का उच्च क्षेत्र था। मुगल काल के समय बाल विवाह की प्रथा थी। यहां तक की मुस्लमान लोग भी अपनी कन्याओं का दस वर्ष में विवाह कर देते थे। हिन्दुओं में सती प्रथा प्रचलित थी। वे विधवायें जो सती नहीं होती थी उनको समाज में नीची दृष्टि से देखा जाता था। अकबर और जहांगीर ने इस प्रथा को अंत करना चाहा लेकिन सफल नहीं हुआ। इस काल में पर्दा प्रथा मुस्लमानों में काफी प्रचलित थी उतनी हिन्दू में नहीं थी। तुर्को के भारत आने के बाद हिन्दू स्त्रियां भी पर्दा आरंभ कर दिया था ताकि वह अपने सतीत्व की विदेशियों से रक्षा कर सकें।

जहां तक साधारण वर्ग की स्त्रियों की शिक्षा का संबंध था उसका कोई प्रबंध न था। उनमें से कुछ ही स्कूल में शिक्षा प्राप्त करती थी, जो निजी घर पर किसी गृह स्त्री द्वारा खोले जाते थे। अकसर वह अपने पिता द्वारा ही शिक्षा प्राप्त करती थी। गरीब घर की लड़कियां अनपढ़ ही रहती थी। कभी–कभी मुल्ला या, पंडित उन्हें कुछ पढ़ा देते थे। पर्दा प्रथा के कारण लड़कियों की शिक्षा न तो नियंत्रित थी न ही उस समय उनके लिये अलग से विशेष स्कूल होते थे। फिर विवाह जल्दी होने के कारण उनकी पढ़ाई भी समाप्त हो जाती थी। यद्यपि मुगल काल में स्त्री शिक्षा न थी फिर भी कुछ स्त्रियों ने इस समय के साहित्य में विशेष योगदान दिया। इस काल बहुत सी कवित्रियां हुई है, जिन्होंने विभिन्न विषयों पर कविताएं की है। उनकी कविता के विषय अधिकांशतः गुरू की महिमा, संतों की बड़ाई, ज्ञान के महत्व इत्यादि थे। उन्होंने राम एवं कृष्ण दोनों की ही भक्ति से प्रभावित होकर कविता की है। इनमें इन्दुमति, कलमाशी देवी, दयाबाई, मीराबाई बावरी साहेब, गफूर अली आदि के नाम प्रसिद्ध है। प्रवीनराय परतुर शेख रंगरेजिन तथा रूपमती ने श्रृंगार रस पर कविताएं लिखी थी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सल्तनत काल एवं मुगलकाल तक स्त्रियों के दशा में विशेष परिवर्तन नहीं आया था। सामाजिक रिवाजों के कारण स्त्रियों का जीवन काफी बंधनों में जकड़ा हुआ था। पुत्री का जन्म अशुभ माना जाता था। बाल विवाह होने के कारण जो स्त्रियां जल्दी विधवा जो जाती थी, उनका जीवन काफी कष्टमय से गुजरता था क्योंकि वह पुनः विवाह नहीं कर सकती थी। मुस्लमान पुरूष बहुविवाह कर सकते थे। उनके यहां तलाक प्रथा प्रचलित थी, जो हिन्दूओं में नहीं थी। वैसे तो मुस्लिम स्त्रियों की दशा भी अच्छी नहीं थी फिर भी उन्हें कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे, जो हिन्दू स्त्रियों को प्राप्त नहीं थे। मुस्लमान स्त्रियां विधवा होने के बाद पुनः विवाह कर सकती थी। सती होने की आवश्यकता नहीं थी। अपने पिता की संपति में भी उन्हें काफी भाग मिलता था। विशेष परिस्थिति में वह तलाक भी कर सकती थी। हिन्दू स्त्रियों को ऐसी कोई स्वतंत्रता न थी। इतना सब होते हुये भी स्त्रियों ने विभिन्न क्षेत्रों में भाग लिया तथा अपनी पहचान बनायी।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. स्पेक्ट्रम – इतिहास, पृ0 सं0–419
2. मिश्रा, रेखा – वीमेन इन मुगल इंडिया, दिल्ली
3. चटर्जी, जी0 एच0 – हर्षवर्द्धन पृ0सं0–308
4. वैद्य, सी0 बी0 – हिस्ट्री ऑफ मेडिकल इंडिया, जिल्द, पृ0सं0–6
5. श्रीवास्तव, ए0एल0 – मेडिवल इंडिया कल्चर, पृ0 सं0– 23
6. बाशम, ए0 एल0 – दि वन्डर देट वाज इंडिया, पृ0सं0–115
7. कुरेशी, आई0 एच0 – एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ दि सुल्तान्स ऑफ देलही पृ0सं0–65
8. रिजवी – खिलजी कालीन भारत, पृ0सं0–39
9. गुप्त, कुमार शिव – मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति , पृ0सं0–41
10. रिजवी – खिलजी कालीन भारत,पृ0सं0–173
11. इलियट एण्ड डाउसन – हिस्ट्री ऑफ इंडिया एज टोल्ड वाइ इटस ऑन हिस्टोरियन्स, जिल्द–3 पृ0सं0–426
12. त्रिपाठी, आर0 पी0 – सम आस्पेक्ट ऑफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रशन पृ0सं0–109
13. मिश्रा, रेखा – वही, पृ0सं0–24
14. त्रिपाठी, आर0 जी0 – महामअनगा एण्ड अकबर, 'जनरल ऑफ इंडियन हिस्ट्री, जिल्द नं0–1पृ0सं0–338
15. अकबरनामा – जिल्द–3,पृ0सं0 – 1140
16. याजदानी, जी0 – जहांआरा, जर्नल ऑफ पंजाब हिस्टोरिकल सोसायटी, जिल्द–2, 1912 पृ0सं0–155
17. सरदेसाई, जी0 एस0 – न्यू हिस्ट्री ऑफ मराठाज, जिल्द–1, पृ0सं0–350
18. सतीशचन्द्र – पार्टीज एण्ड पालिटिक्स एट दि मुगलकोर्ट, पृ0सं0–70–71